© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

आदिवासी जीवन : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण

नागदेव यादव
शोध–छात्र
हिन्दी विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार।

भारतवर्ष में हजारों वर्षों से जंगलों व पहाडों में रह रही आदिम जनजातियों ने खुले मैदानों तथा सभ्यता के केन्द्रों में बसे लोगों से अधिक सम्पर्क स्थापित किये बिना ही अपने अस्तित्व को बनाये रखा है। उत्तर वैदिक काल 1000 ई0 पू0 से 600ई0पू0 हिन्दूवाद के उद्भव जनजातियों के आर्यीकरण तथा आर्यों के जनजातीयकरण की दोहरी प्रक्रियाओं के चलते रहने से लाभान्वित है। दो महाकाव्यों–रामायण तथा महाभारत जिनका ऐतिहासिक महत्त्व कुछ भी हो में जनजातियों जैसे शूद्र, अभीर, द्रविड़, पुलिन्द, शबरी अथवा सौर का सन्दर्भ आता है। इनमें से एक सर्वाधिक सुपरिचित है और सम्भवतः वह एकमात्र जनजाति है जो आज भी विद्यमान है तथा जिसके सबसे प्रारम्भिक सन्दर्भ ऐतरेय ब्राह्मण में खोजे जा सकते हैं। वह है शबरी जिसने राम को फल भेंट किये थे। वेरियर एलविन के शब्दों में 'शबरी ऐसे योगदानों का एक ऐसा प्रतीक बन चुकी है कि जनजातियाँ भारत के जीवन का निर्माण कर सकती है और करेंगी।[1] उस समय ज्ञात जनजातियों में से अधिकांश के महाभारत तथा असंख्य घटनाओं में सम्मिलित होने का दावा किया गया है। एकलव्य नामक एक भील जिसने द्रोणाचार्य को अपना अंगूठा अर्पित कर दिया था, दंत कथाओं में एक आदर्श शिष्य के रूप में वर्णित किया गया है। मुण्डा तथा नागाओं ने कौरवों की ओर से पाडवों के विरुद्ध लड़ने का दावा किया है। भीम का पुत्र घटोत्कच जिसने युद्ध में असाधारण वीरता का प्रदर्शन किया था का जन्म भीम की जनजातीय पत्नी हिडिम्बा से हुआ था। अर्जुन ने एक नागा राजकुमारी चित्रांगदा से विवाह किया था।

ऐतिहासिक काल के प्रारम्भिक चरण में आक्रमणकारियों तथा मुख्य साम्राज्य शक्तियों द्वारा छोटी जनजातीय टुकड़ियों को पराधीन बनाया गया। अजातशत्रु ने वैशाली जनजातीय गणतंत्र को नष्ट कर दिया। सिकन्दर ने उत्तर–पश्चिमी सीमा पर जनजातियों का सफाया कर दिया।[2] सामन्त काल400–1000ई0 में जनजातीय क्षेत्रों को अपेक्षाकृत अधिक खुलापन प्राप्त हुआ तथा जनजातीय मुखियों का हिन्दुत्वीकरण हुआ। पुजारियों ने जनजातियों ने उनके लिए उपयुक्त पौराणिक वंशावली तैयार की तथा सत्ताधारी ब्राह्मण वर्ग ने जनजातियों के सास्कृतीकरण तथा ब्राह्मणीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया इसके पश्चात् 11वीं तथा 12वीं शताब्दियों में मुसलमान राजाओं के आक्रमण के कारण उनकी अधीनता न स्वीकार करने वाले राजपूतों का जनजातीय क्षेत्रों में प्रवेश प्रारम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप बहुत सी जनजातीय टुकड़ियाँ नष्ट हो गई। सन 1585 तथा 1616ई0

में मुसलमान सेनाओं ने छोटानागपुर में प्रवेश किया तथा खुकरा के राजा को अपने अधीन कर लिया। 1661ई0 के आसपास दाउद खाँ ने पलामू के चेरों को अपने अधीन कर लिया।[3] इस काल में उत्तर पश्चिमी सीमा क्षेत्र में कुछ जनजातियों का इस्लाम धर्म में धर्मान्तरण हुआ।

इसके पश्चात् अब अंग्रेज उपनिवेशवादी अपनी आधुनिक प्रौद्यौगिकी नवीन उपागम तथा निहित स्वर्थों के साथ प्रकट हुए। अंग्रेजी शासन के उद्भव का अर्थ जनजातीय क्षेत्रों का समुद्री किनारों एवं बिहार तथा बंगाल में प्रवेश था। 18 वीं शताब्दी में जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय व्यवस्था के भंग हो जाने की स्थिति में जनजातियो की चिरस्मरणीय सहनशक्ति तथा धैर्य का बाँध टूट गया। 18वीं शताब्दी के अन्त में पहाड़िया लोगों का विद्रोह, मुण्डा विद्रोह (1789–1901) संथाली विप्लव (1855–56), भील विद्रोह (1879–80) बस्तर विद्रोह (1910–11) तथा गोंड़ विद्रोह (1940) भारत की जनजातियों में नयी जागरुकता के कुछ उदाहरण है। ईसाई सम्प्रदाय के लोग ब्रिटिश शासकों की संरक्षता में जनजातीय क्षेत्रों में बहुत अन्दर तक प्रवेश कर गए। यह आगे चलकर जनजातियों में अनेक आन्दोलनों का कारण बना। ऐसे आन्दोलनों में खेखर आन्दोलन (1871–80) सरदारी आन्दोलन (1881–95) बिरसा आन्दोलन (1895–1901) ताना भगत आन्दोलन (1920–35) शामिल है।

ब्रिटिश उपनिवेशवासियों की विदाई तथा स्वतंत्र भारत के उदय के साथ देश के जनजातीय नागरिकों को उचित न्याय व व्यवहार देने का वादा किया गया। इस प्रकार इनकों कुछ मामलों में प्रगति में भागीदारी का विशेष अवसर भी प्राप्त हुआ। जनजातियों की उन्नति हमारे संविधान निर्माताओं के विश्वास का प्रतीक था। उनके स्वप्नों को पूरा करने का दायित्व हम सबके उपर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. जनजातीय भारत,नदीम हसनैन, पृ06।
2. झारखण्ड सामान्य ज्ञान संजीव कुमार, पृ0238।
3. जनजातीय भारत,नदीम हसनैन पृ08।